

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189



मातृभाषा में शिक्षण: भारतीय परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ, अनुभव एवं समाधान

ORIGINAL ARTICLE



Author

डॉ. ज्योति गुप्ता

सहायक आचार्य

शिक्षाशास्त्र विभाग

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय

लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

मातृभाषा बालक के बौद्धिक, भाषाई, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास की आधारशिला मानी जाती है। जब शिक्षण की प्रारंभिक अवस्था में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा अथवा परिचित भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है, तो अधिगम अधिक सहज, प्रभावशाली एवं अर्थपूर्ण बन जाता है। वर्तमान समय में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोधों ने यह प्रमाणित किया है कि मातृभाषा आधारित शिक्षा बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता, रचनात्मकता तथा सीखने की उपलब्धियों को सुदृढ़ करती है। इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) ने प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा या स्थानीय भाषा को शिक्षण का प्रमुख माध्यम बनाने पर विशेष बल दिया है। भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषा आधारित शिक्षण न केवल अधिगम को सरल बनाता है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता, भाषाई विरासत तथा राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संदर्भ में मातृभाषा का उपयोग शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है। प्रस्तुत अध्याय में मातृभाषा आधारित शिक्षण की संकल्पना, उसके शैक्षिक महत्व, व्यावहारिक चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का

विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है साथ ही, मातृभाषा आधारित शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाने के लिए आवश्यक सुझावों का भी समावेश किया गया है।

मुख्य शब्द

मातृभाषा, मातृभाषा आधारित शिक्षण, बहुभाषिकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.

प्रस्तावना

“अगर आप किसी व्यक्ति से ऐसी भाषा में बात करते हैं जिसे वो समझता है, तो वह उसके मस्तिष्क पहुंचती है, लेकिन अगर आप उससे उसकी मातृभाषा में बात करते हैं तो वो उसके हृदय तक पहुंचती है।”
नैलसन मंडेला

भाषा मानव जीवन की अभिव्यक्ति, संप्रेषण, संस्कृति एवं ज्ञान के संरक्षण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रत्येक बालक अपने प्रारंभिक अनुभवों, विचारों तथा सामाजिक व्यवहार का निर्माण मुख्यतः अपनी मातृभाषा के माध्यम से करता है। महात्मा गाँधी भी बच्चे की शिक्षा का सबसे स्वाभाविक माध्यम उसकी मातृभाषा ही मानते हैं इसलिए शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था में मातृभाषा का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक स्वाभाविक, सहज एवं प्रभावशाली बनाता है। मातृभाषा में शिक्षण से अभिप्राय ऐसी शिक्षण व्यवस्था से है, जिसमें विद्यार्थियों को उनकी प्रथम भाषा अथवा घर-परिवार में प्रचलित भाषा के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया जाता है। यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों की भाषाई पृष्ठभूमि, पूर्व अनुभवों तथा सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए अधिगम को अधिक प्रभावी एवं सार्थक बनाती है। मातृभाषा आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी विषय-वस्तु को सरलता से समझ पाते हैं, अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय

September to November 2026 www.amoghvarta.com

A Double-blind, Peer-reviewed & Referred, Quarterly, Multidisciplinary and
Bilingual National Research Journal

Impact Factor
SJIF (2026): 8.124

112

सहभागिता करते हैं। इसके अतिरिक्त यह पद्धति बच्चों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या-समाधान क्षमता के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसी कारण आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा आधारित शिक्षण को समावेशी, बालक-केंद्रित एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक प्रभावी माध्यम माना जाता है।

वर्तमान वैश्वीकरण एवं तकनीकी प्रगति के दौर में यद्यपि विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी का महत्व बढ़ा है, फिर भी अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि बच्चों का बौद्धिक, भाषाई तथा सामाजिक-भावनात्मक विकास मातृभाषा के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से होता है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा को प्राथमिकता प्रदान करते हुए गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है।

मातृभाषा में शिक्षण का महत्व

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावी माना जाता है। यह न केवल अधिगम प्रक्रिया को सहज एवं अर्थपूर्ण बनाता है, बल्कि बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। मातृभाषा आधारित शिक्षण के प्रमुख महत्व निम्नलिखित हैं:

- **अधिगम को सहज एवं प्रभावी बनाना:** जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है, तो वे विषय-वस्तु को अधिक सरलता से समझ पाते हैं। परिचित भाषा होने के कारण नई अवधारणाओं को ग्रहण करने, उन्हें याद रखने तथा व्यवहार में लागू करने की क्षमता में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली एवं सार्थक बन जाती है।
- **संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहन:** मातृभाषा में शिक्षण विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता, रचनात्मकता, निर्णय लेने की योग्यता तथा समस्या-समाधान कौशल का विकास अधिक प्रभावी ढंग से होता है। विद्यार्थी जटिल अवधारणाओं को भी बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होते हैं।
- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:** मातृभाषा किसी भी समाज की संस्कृति, परंपराओं, लोकज्ञान, साहित्य तथा नैतिक मूल्यों की संवाहक होती है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने से विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति सम्मान एवं जुड़ाव विकसित होता है तथा सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन सुनिश्चित होता है।
- **आत्मविश्वास एवं सक्रिय सहभागिता:** अपनी भाषा में सीखने वाले विद्यार्थी कक्षा की गतिविधियों में अधिक उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। वे अपने विचारों, अनुभवों एवं प्रश्नों को बिना किसी संकोच के व्यक्त कर पाते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक सहभागितापूर्ण बनती है।
- **समावेशी एवं समान अवसर आधारित शिक्षा:** मातृभाषा आधारित शिक्षण विभिन्न भाषाई, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को समान रूप से सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह शिक्षा में समानता, समावेशन तथा गुणवत्तापूर्ण अधिगम को बढ़ावा देने के साथ-साथ सीखने की असमानताओं को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मातृभाषा में शिक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि मातृभाषा आधारित शिक्षण विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं प्रभावी अधिगम के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है, तथापि इसके सफल कार्यान्वयन में अनेक व्यावहारिक, प्रशासनिक तथा सामाजिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना मातृभाषा आधारित शिक्षा के अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति संभव नहीं है। प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री एवं संसाधनों का अभाव:** भारत की अनेक मातृभाषाओं में आधुनिक विषयों से संबंधित उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, डिजिटल सामग्री तथा मल्टीमीडिया शिक्षण संसाधनों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रशिक्षित एवं दक्ष शिक्षकों की कमी:** मातृभाषा आधारित बहुभाषिक शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों में विषयगत ज्ञान के साथ-साथ भाषाई एवं शैक्षणिक दक्षताओं का होना आवश्यक है, किंतु वर्तमान में अनेक शिक्षकों को इस प्रकार के शिक्षण हेतु अपेक्षित प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

- **भाषाई विविधता एवं बहुभाषिक कक्षाएँ:** भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहाँ अनेक राज्यों एवं क्षेत्रों में एक ही कक्षा में विभिन्न मातृभाषाओं वाले विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में सभी विद्यार्थियों की भाषाई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रभावी शिक्षण करना शिक्षकों के लिए एक जटिल कार्य बन जाता है।
- **अंग्रेजी माध्यम के प्रति बढ़ता सामाजिक आकर्षण:** समकालीन समाज में अंग्रेजी भाषा को उच्च शिक्षा, रोजगार तथा वैश्विक अवसरों से जोड़कर देखा जाता है। इस कारण अनेक अभिभावक अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को प्राथमिकता देते हैं तथा मातृभाषा आधारित शिक्षण के प्रति अपेक्षित विश्वास एवं समर्थन नहीं दिखा पाते। यह प्रवृत्ति मातृभाषा आधारित शिक्षा के व्यापक प्रसार में एक महत्वपूर्ण बाधा बनती है।
- **डिजिटल एवं तकनीकी अवसरचना की सीमाएँ:** वर्तमान डिजिटल युग में प्रभावी शिक्षण के लिए ई-सामग्री, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल पुस्तकालय तथा इंटरैक्टिव शिक्षण संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है तथापि अधिकांश भारतीय भाषाओं में इन संसाधनों की उपलब्धता अभी भी सीमित है। इसके अतिरिक्त अनेक विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट उपकरण तथा अन्य तकनीकी सुविधाओं का अभाव भी मातृभाषा आधारित डिजिटल शिक्षण के विस्तार में बाधक सिद्ध होता है।

मातृभाषा में शिक्षण की संभावनाएँ

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में मातृभाषा आधारित शिक्षण की संभावनाएँ निरंतर विस्तृत हो रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता देकर इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है। साथ ही, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), ई-पुस्तकों तथा बहुभाषिक डिजिटल प्लेटफॉर्म के विकास ने भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री तैयार करने और उसे व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराने के नए अवसर प्रदान किए हैं।

वर्तमान समय में स्थानीय भाषाओं में ई-कंटेंट, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल पुस्तकालय, भाषा अनुवाद उपकरण, वॉइस-आधारित तकनीकों तथा बहुभाषिक शिक्षण संसाधनों का तीव्र विकास हो रहा है। इन नवाचारों के माध्यम से मातृभाषा आधारित शिक्षण को अधिक प्रभावी, सुलभ तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, बहुभाषिक शिक्षा मॉडल विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में मजबूत आधार प्रदान करने के साथ-साथ अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में भी दक्ष बनने का अवसर उपलब्ध कराता है। इस प्रकार मातृभाषा आधारित शिक्षा स्थानीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मध्य संतुलन स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष

मातृभाषा आधारित शिक्षण विद्यार्थियों के बौद्धिक, भाषाई, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी माध्यम है। यह न केवल अधिगम प्रक्रिया को अधिक सरल, स्वाभाविक एवं सार्थक बनाता है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, भाषाई विविधता के संवर्धन तथा समावेशी शिक्षा को भी प्रोत्साहित करता है इसलिए मातृभाषा में शिक्षा को केवल भाषा संबंधी पहल के रूप में नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण, समानतापूर्ण एवं शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला के रूप में देखा जाना चाहिए। यद्यपि मातृभाषा आधारित शिक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन में संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, भाषाई विविधता तथा सामाजिक दृष्टिकोण जैसी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, तथापि उपयुक्त नीतिगत समर्थन, आधुनिक तकनीकी संसाधनों, सतत् शिक्षक प्रशिक्षण तथा समाज की सक्रिय सहभागिता के माध्यम से इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान संभव है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में मातृभाषा आधारित शिक्षण भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, लचीला एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यदि बहुभाषिक शिक्षा, डिजिटल नवाचारों तथा स्थानीय भाषाओं के संरक्षण को समन्वित रूप से आगे बढ़ाया जाए, तो मातृभाषा आधारित शिक्षण न केवल विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुदृढ़ करेगा, बल्कि भारत को ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

सुझाव

मातृभाषा आधारित शिक्षण को प्रभावी एवं सफल बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते हैं—

- विभिन्न भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों तथा डिजिटल शिक्षण सामग्री का व्यापक विकास किया जाए।

- शिक्षकों को मातृभाषा आधारित बहुभाषिक शिक्षण, आधुनिक शिक्षण तकनीकों तथा डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु नियमित प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।
- अभिभावकों एवं समाज में मातृभाषा आधारित शिक्षा के शैक्षिक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक लाभों के प्रति व्यापक जन-जागरूकता अभियान संचालित किए जाएँ।
- स्थानीय भाषाओं में ई-कॉन्टेंट, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शैक्षिक ऐप तथा बहुभाषिक डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित कर उनकी सुलभता सुनिश्चित की जाए।
- विद्यालयों में बहुभाषिक एवं समावेशी शिक्षण वातावरण को प्रोत्साहित करते हुए विभिन्न भाषाओं के प्रति सम्मान एवं संवेदनशीलता विकसित की जाए।
- मातृभाषा आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता का निरंतर मूल्यांकन करने तथा नवीन शिक्षण मॉडल विकसित करने के लिए शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन दिया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के प्रावधानों के अनुरूप विद्यालयों में मातृभाषा आधारित शिक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधन, तकनीकी अवसंरचना तथा संस्थागत सहयोग उपलब्ध कराया जाए।

सन्दर्भ सूची

1. Cummins, J. (2000). *Language, Power and Pedagogy: Bilingual Children in the Crossfire*. Multilingual Matters, Toronto.
2. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education. New Delhi.
3. Ministry of Education. (2021). *Implementation Plan for National Education Policy 2020 (SARTHAQ)*. Government of India. New Delhi.
4. Mohanty, A. K. (2009). *Multilingual Education: A Bridge Too Far? In Social Justice through Multilingual Education* (pp. 5–34). Multilingual Matters, Toronto.
5. Mohanty, A. K. (2019). *The Multilingual Reality: Living with Languages*. Multilingual Matters, Toronto.
6. NCERT. (2005). *National Curriculum Framework (NCF) 2005*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
7. NCERT. (2023). *National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE 2023)*. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
8. NCF Foundation. (2022). *Multilingual Education and Foundational Literacy*. NCF Foundation, New Delhi.
9. Piaget, J. (1972). *The Psychology of the Child*. Basic Books, New York.
10. Skutnabb-Kangas, T. (2000). *Linguistic Genocide in Education—or Worldwide Diversity and Human Rights?* Lawrence Erlbaum Associates, London.
11. UNESCO. (1953). *The Use of Vernacular Languages in Education*. UNESCO, Paris.
12. UNESCO. (2016). *If You Don't Understand, How Can You Learn?* Global Education Monitoring Report, Policy Paper 24. UNESCO, Paris.
13. UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education*. UNESCO, Paris.
14. UNICEF. (2020). *The Importance of Learning in One's Mother Tongue*. UNICEF, Cambridge.
15. Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes*. Harvard University Press, Cambridge.

—==00==—